National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(59): 271-274
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

श्वेता पाण्डेय
शोधार्थी (संस्कृत विभाग),
डी.जी.पी.जी. कॉलेज,
कानपुर

प्रो० आशारानी पाण्डेय
संस्कृत विभाग प्रभारी,
डी.जी.पी.जी.कॉलेज,
कानपुर

Correspondence:
श्वेता पाण्डेय
शोधार्थी (संस्कृत विभाग),
डी.जी.पी.जी. कॉलेज,
कानपुर

विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य में निहित ज्ञान विज्ञान

श्वेता पाण्डेय, प्रो० आशारानी पाण्डेय

सार (Abstract)

आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है ऐसा विज्ञान के विषय में कहा जाता है और इस आवश्यकता को हमारे महर्षियों को पूर्व से ही ज्ञात था, तभी उनकी सम्पूर्ण क्रियाएँ वैज्ञानिकता से युक्त होती है और इसीलिए उन्होंने अपनी वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उपासना का रूप दिया, यही कारण था कि उन्हें महर्षि कहा गया, वास्तविक अर्थो में वो 'वैज्ञानिक' थे। उनका ये ज्ञान परम्परागत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा और विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य का निर्माण हुआ । महाकवि वेंकटाध्वरि ने जिस प्रकार से वैज्ञानिक विद्वता का परिचय इस ग्रन्थ में दिया वो अद्वितीय था । महाकवि का ये चम्पूकाव्य पाठकों को विश्वयात्रा पर ले जाता है किन्तु इसके साथ ही साथ वैज्ञानिकता का समावेश किया है ताकि पाठकों को उस काल के वैज्ञानिक ज्ञान की उत्कृष्टता का ज्ञान हो सके ।

भूमिका

विज्ञान शब्द वि+ज्ञान से बना है जिसका अर्थ विशिष्ट ज्ञान से है ।

मनुष्य की जिज्ञासा नवीन निर्माण की जननी होती है और हमारे वेद इसके मूल कारक है, जिसको हमारे महान विद्वानों ने स्वयं के विलक्षण ज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उस ज्ञान को नवीन आविष्कारों में परिवर्तित किया । शून्य का आविष्कार करने वाले आर्यभट्ट, शल्य चिकित्सा के जनक महर्षि सुश्रुत, आयुर्वेद विशारद महर्षि चरक, परमाणु संरचना को सर्वप्रथम प्रकाशित करने वाले आचार्य काणाद , गणित और खगोलविद आचार्य वाराहमिहिर आदि उदाहरणों से हमारे ग्रन्थ भरे हुए है जिनकी प्रेरणा से आधुनिक वैज्ञानिक कई आधुनिक निर्माणों को करके मानव जीवन को सरल और सुगम बनाने का प्रयास कर रहे है ।

यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण रचनाकारों की रचनाओं में भी परिलक्षित होता है | हमारे महान काव्यकार और ग्रन्थकारों की रचनाओ से केवल पाठकों का मनोरंजन ही नहीं होती वरन उस काल का राजीनीतिक, सामजिक और आर्थिक पक्ष का भी ज्ञान होता है और साथ ही उस काल की सांस्कृतिक और वैज्ञानिक परिवर्तनों का भी ज्ञान होता है । वैसे ऐसी अनेक रचनाये है जो वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरी उतरती है किन्तु महाकवि वेंकटाध्वरि द्वारा रचित विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य विज्ञान की दृष्टि से सर्वोत्तम रचना है ।

सौर प्रकाश

महाकवि वेंकटाध्वरि ने रचना के प्रारंभ में ही अपने प्रमुख पात्रों कृशानु और विश्वावसु नामक दो गन्धर्वो द्वारा सूर्य आराधना से किया है । सूर्य इस सृष्टि के लिए आत्मा स्वरुप है **"ॐ सूर्य आत्मा जगतस्तस्युषश्च"**। जिस प्रकार आत्मा विहीन शरीर का कोई अस्तित्व नहीं होता उसी प्रकार सूर्य के बिना इस सृष्टि की कल्पना करना ही व्यर्थ है । महाकवि वेंकटाध्वरि तो सूर्य विहीन दिन को 'दुर्दिन' कहते है- **"यदा न पश्यन्ति तमोविमर्दिनं रविं जनास्तत् कथयन्ति दुर्दिनम्" |** (विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या - 10)

हमारे महर्षियों को सूर्य की महत्ता के विषय में ज्ञात था इसीलिए उन्होंने मानव के दैनिक जीवन का आरम्भ सूर्य आराधना से करना निश्चित किया । सूर्य सृष्टि को प्रकाशित करता है और साथ ही वनस्पतियों तथा जीवों के लिए जल का सृजन भी करता है इसी को महाकवि वेंकटाध्वरि ने उद्दृत करते हुए लिखते है –

"वृष्टिं घृष्टिभिरारचय्य जगतस्तुष्टिं सरीसर्ष्टि यः,

पुष्टिं द्राग् विशिनष्टि दृष्टिषु नृणां ध्वान्तं पिनष्टि स्थिरं"।

(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-09)

सूर्य का प्रकाश वनस्पतियों को उनका भोजन निर्माण करने के लिए पर्याप्त उर्जा प्रदान करता है और इस क्रिया के फल स्वरुप प्राणवायु (ऑक्सीजन) प्राप्त होती हैद्य इसी को डच-ब्रिटिश भौतिकशास्त्री जान इंगेनहौज ने 'प्रकाश संश्लेषण' का नाम दिया है। वही दूसरी ओर सूर्य का प्रकाश जैविक प्रक्रियाओं में वृद्धि करने, निद्रा चक्र को संतुलित करने, मानव शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने, मानव अस्थियों को पुष्ट करने में सहायक है । इसी को अमेरिकी बायोकेमिस्ट एल्मर वार्नर मक्कोल्लम ने विटामिन डी का नाम दिया। महाकवि वेंकटाध्वरि वर्णन करते हुए कहते है –

"धिनोति चाम्भोजतर्तिं सरोगतां धुनोत्यसौ देहभृतां सरोगताम्"।

(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-10)

<u>विमान यात्रा –</u>

विमान यात्रा ये हमारे विद्वान् महर्षियों की ही दूरदर्शिता थी जिन्होंने विमानयात्रा जैसे भविष्यवादी विषय को संभव बनाने में सहायता प्रदान किया । अपौरुषीय वेदों में 'रथ' नाम से अनेक वाहनों का वर्णन किया गया है जो पृथ्वी, जल, वायु सर्वत्र स्थानों पर चलते है। ऋगवेद में विमान यात्रा का वर्णन करते हुए कई मन्त्र उद्दृत है – **"युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षता रथेद्य शोणा धृष्णु नृवाहसा"।**[4] (ऋगवेद 1/6/1)

विद्युत विज्ञान द्वारा सेनाओं में काम आने वाले रथों का वर्णन भी किया गया हैं **"अस्मे घेहि श्रवों वृहद द्युम्नं सहस्त्रसातमम् । इन्द्र ता रथनीरिषः"।** (ऋगवेद 1/9/8)

आर्षकवि वाल्मीकि ने रामायण में पुष्पक विमान का वर्णन करते हुए लिखा है **"यस्य तत्पुष्पक नाम विमान कामग शुभम् ।**

वीर्यादावजित भद्रे येन यामि विहायसम् ।।"

(रामायण अरण्यकाण्ड 48/6)

महाराजा भोज 'समराङ्गणसूत्रधार' ग्रन्थ में पारे से उड़ने वाले विमान का वर्णन किया है और महर्षि भरद्वाज ने तो अपने 'यंत्रसर्वस्व' ग्रन्थ के अंतर्गत 'वैमानिक प्रकरण' विमान के विषय को सूक्ष्मता के वर्णन किया है । विमान की परिभाषा करते हुए महर्षि भरद्वाज लिखते है –

"वेगसाम्याद् विमानों अण्डजानाम्" ।

(वृहद् विमानशास्त्र अध्याय 1, सूत्र 1)

इस ग्रन्थ में महर्षि ने विमान की गूढ़ संरचना के साथ विमान चालक से सम्बंधित सम्पूर्ण रहस्यों का वर्णन किया है । पाठकों को इस ग्रन्थ का पठन करते समय ये अनुभव ही नहीं होता कि इस ग्रन्थ की रचना 4000 वर्ष पूर्व हुई थी और इससे यह ज्ञात होता है कि विमान जैसे संयंत्र का निर्माण हुआ था, तभी महाकवि वेंकटाध्वरि के विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य के प्रमुख पात्रों कृशानु और विश्वावसु को विमान पर चढ़कर विश्व दर्शन की इच्छा से आकाश में घुमने निकले

"विश्वावलोकस्पृहया कदाचिद् विमानमारूह्य समानवेषम् ।

कृशानु -विश्वावसुनामधेयं गन्धर्वयुग्मं गगने चचार ।।"

(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-5)

<u>पर्यटन विज्ञान –</u>

मानव जीवन मे सदैव से पर्यटन का विशेष स्थान रहा है और वर्तमान युग में ये आवश्यकता की सूची में आ गया है । पर्यटन का विज्ञान केवल मनोरंजन तक ही सीमित नही रह गया है अपितु मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, आर्थिक विज्ञान, सांस्कृतिक और व्यवहारिक विज्ञान बन गया है । वर्तमान युग प्रतिस्पर्धी युग है जिसमे प्रत्येक व्यक्ति रत रहता है जिसके कारण उसकी दैनिकचर्या बहुत प्रभावित होती है । इस असंतुलित जीवन का प्रभाव शनैःशनैः मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर पढ़ता है और कार्य करने की क्षमता क्षीण हो जाती है, सामाजिक मेल जोल ना होने के कारण व्यक्ति अवसाद से भर जाता है इसीलिए पर्यटन के विज्ञान को समझते हुए ही महाकवि वेंकटाध्वरि द्वरा रचित विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य की रचना किया ताकि पाठकों के हृदय में भी विश्वदर्शन की अभिलाषा उत्पन्न हो जैसे चम्पूकाव्य के प्रमुख पात्रों को इच्छा उत्पन्न हुई –

"विश्वावलोकस्पृहया कदाचिद् विमानमारूह्य समानवेषम् ।

कृशानु - विश्वावसुनामधेयं गन्धर्वयुग्मं गगने चचार" ।।

(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या- 5)

इस चम्पूकाव्य के प्रमुख पात्रों ने भारत वर्ष की कई विविध संस्कृतियों से पाठकों का परिचय कराया । उनके व्यवहार, धार्मिक मान्यताएँ, जन जीवन, तीर्थो, भोजन, प्राकृतिक संपदाओ आदि विविधताओं से परिचय कराकर पाठकों के हृदय में पर्यटन की इच्छा उत्पन्न हो । जैसे बदरिकाश्र0म के हिमाच्छादित पर्वतो के मध्य शेषशायी नारायण के दर्शन करते हुए तथा तपस्यारत साधुजनों का वर्णन किया –

"इदं बदरिकाश्रमस्थलमिहैष नारायणस्तपस्यति स्थिरतमं तमः शोषयन्" । (विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-33)

सरयू नदी के तट पर स्थित अयोध्या नगरी तथा सूर्यवंश की कीर्ति को जानना, माँ स्वरूपा गंगा नदी जिसने भूमि को उपजाऊ बनाया तथा इसके तट पर बसे नगर जैसे प्रयागराज जहा तीन नदियों का संगम हुआ और अविनाशी भूतनाथ की नगरी काशी की ऐतिहासिकता और धार्मिकता का वर्णन किया है –

"प्रदोषवत्प्राप्त इह प्रदोषनटोऽन्धकारिव्यपदेशमेति ।

प्रकाशयत्येष हितारकोद्यद्वर्णान्नृणां कर्णनभःप्रदेशे" ।।

(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-87)

महाराष्ट्र, आन्ध्रा,कर्नाटक आदि स्थानों के विशाल वन सम्पदा तथा प्राकृतिक सुन्दरता का वर्णन करते हुए चम्पूकाव्यकार लिखते है -

"पुरः पुरो घनं वनं वने वने महागिरिर्महागिरौ महागिरौ विराजते गुहागृहम् ।
गुहागृहे गुहागृहे विहारतत्परो हरिर्हरौ हरौ निरंकुशः कृतेभसाध्वसो ध्वनिः।। (विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-207)

श्रीनिवास भगवन् तथा माँ पद्मावती का स्थान वेंकटागिरी पर्वत, सप्त नगरी में विशेष स्थान रखने वाली कांचीपुरम, पञ्चभूतों में पृथ्वी तत्व के सूचक एकाम्रेश्वर, आदिशंकराचार्य की आराध्य माँ कामाक्षी, भगवान् श्री राम और माँ सीता के पवित्र और आध्यात्मिक प्रेम का सूचक राम सेतु आदि का वर्णन पाठकों की जिज्ञासा को बढ़ाता है और जब कोई व्यक्ति इस भौतिकवादी जीवन से अंतराल लेकर इन पवित्र स्थानों पर जाता है तो उसके व्यक्तित्व और व्यवहार में संयम, उदारता, प्रेम जैसे गुणों का विकास होत है और व्यर्थ चिन्ताओं तथा अवसाद से मुक्ति प्राप्त हो जाती है । मनोविज्ञान की दृष्टि से पर्यटन व्यक्ति के भीतर होने वाली एकरसता को दूर करता है, तीर्थाटन करने से व्यक्ति अपनी धार्मिक मान्यताओं और मानसिक शांति का अनुभव करता है, प्रकृति के समीप जाता है और शारीरिक विषमताओ को दूर करने में सहयता प्राप्त होती है, विभिन्न संस्कृतियों को जानने समझने का अवसर मिलता है, प्रेम और सौहाद्र जैसे गुण स्वतः विकसित होने लगते है, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ता है, सकरात्मक सामजिक संबंध विकसित होते है, विश्व बंधुत्व की भावना का विकास होता है । यही कारण है कि हर वर्ष 27 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस मनाया जाता है ।

<u>पर्यावरण विज्ञान-</u>

'परितः आवरणम् पर्यावरणं अर्थात वह प्रकृति तत्व जिसने चारो ओर से प्राणी जगत को घेरा हुआ है, पर्यावरण कहलाता है तथा पर्यावरण के भौतिक, रासायनिक और जैविक अवयवों के बीच पारस्परिक क्रियाओं का अध्ययन पर्यावरण विज्ञान कहलाता है। पर्यावरण के बिना मानव सभ्यता के सृजन की कल्पना करना ही व्यर्थ है और ये हमारे ऋषिगणों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही था कि उन्होंने सम्पूर्ण प्रकृति को मातृ स्वरुप माना तथा उनको सुरक्षित रखने और सेवा करने की शिक्षा दिया । जल ही जीवन है और किसी भी मानव सभ्यता को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । जल का मुख्य स्त्रोत नदियाँ होती है और वेदों में नदियों को मातास्वरुप माना गया है –

"ता अस्मश्यं पमसा पिन्वमाना शिवादेवीरशिवद्
भवन्त सर्वा नधः अशिमिहा भवन्तु" ।। (ऋगवेद 7/50/4)

और जल को संरक्षित करने तथा सुरक्षित रखने के विषय में वेद कहते है – **"अपामह दिव्यानामपा स्रोतस्यानाम ऊपामह प्रण्जनेदशवा भवय वाजिनः"।।** (अथर्ववेद 19/01/4)

इसी से प्रेरणा लेते हुए महाकवि ने विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य में भारतवर्ष की उत्तर से लेकर दक्षिण तक की सभी पवित्र और जीवनदायनी नदियों का वर्णन किया है जैसे पुनीत पावन माँ गंगा की महिमा का वर्णन करते हुए कहते है

"गाङ्गानि वारिगरुडध्वजपादपद्मादाविर्बभूवुरपुनन् पुनरिंदुमौलिम्।
निन्युर्विचित्रममृतंसगरान्वयं च नेतोऽधिकं भुवि पवित्रतमं समं वा।।"
(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-76)

इसके पश्चात् महाकवि सरयू नदी, कृष्णा नदी, गोदावरी नदी, कावेरी नदी क्षीर नदी, वाहा नदी का वर्णन किया है –

"अहो कृष्णा गोदावरी मध्यमध्यासीनानाममीषां वैदिकानाम अभिनंदनीयोऽयमनपायः सम्प्रदायः"।।
(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-58)

कावेरी के प्रवाह से विस्मित होते हुए महाकवि लिखते है –

"हन्त रंगपुरसङ्गत मात्राहं तरङ्गचलपङ्कजसङ्गम् ।
सह्यजायतझरं बहु मन्ये स ह्यजायत तमः शमनार्थम्"।।
(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-390)

अनास्वाद्य जल वाली क्षीर नदी भी साधुजनों द्वारा पूजित है इसका वर्णन करते हए महाकवि लिखते है –

"क्वचन समागत सिन्धुनि धुनिजले साधुनि स्नानं ।
पङ्कविलोपं कलयति संघटयति श्रियमिति बुधाः"।।
(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-354)

वाहा नदी के तट श्रेष्ठ श्रोत्रिय ब्राह्मणों के निवास के योग्य है इसका वर्णन करते हए महाकवि लिखते है –

"अस्याश्चोत्तरतीरे श्रोत्रियोत्तंसनिवासयोग्यः समग्रगुणोऽसावग्रहारः संलक्ष्यते पश्य1" (विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-153)

इन उदाहरणों से पाठकों के हृदय नदियों के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न होता है और उन्हें प्रदूषित ना करने की प्रेरणा भी प्राप्त होते है। क्योकि जल प्रदूषण आज की बहुत बड़ी समस्या है और हमारे वेद भी जल को प्रदूषित नहीं करना चाहिए ऐसा कहते है - **मा आपो हिंसी।**[20] (यजुर्वेद 6/22) जैविक प्रक्रियाओं के लिए जल के साथ शुद्ध वायु की आवश्यकता होती है और शुद्ध वायु के लिए वनों का होना अति महत्वपूर्ण है । वन ना केवल जलवायु चक्र को संतुलित करते है वरन वे पशु पक्षियों के निवास स्थान होते है । ये वन वानप्रस्थियों के आश्रय स्थल होते है, इन्ही वनों में महान महर्षियों ने योग साधना को चरमोत्कर्ष तक पहुचाया है। उन्हें ज्ञात था की वृक्षों में जीवन होता है वो भी मनुष्यों के भाँति संवेदनाओं का अनुभव करते है और प्रदर्शित भी करते है , इसका सबसे सुंदर प्रमाण कविकुलगुरु कालिदास ने अपनी कृति अभिज्ञानशाकुंतलम में दिया है, कि किस

प्रकार से वृक्षों ने कण्व ऋषि की पालिता पुत्री शकुन्तला की विदाई के समय आभूषण और सुंदर वस्त्र प्रदान किये –

"क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डू तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतम् निष्ठ्यूतश्चर-णोपरागसुभगो लाक्षारसः केनचित्! अन्येभ्योवनदेवताकरतलैरा-पर्वभागोत्थितै - र्दत्तान्याभरणानि नः किसलयोद्भेद प्रतिद्वंद्विभिः"।।

(अभिज्ञानशाकुंतलम 4/5)

वनों की उपयोगिता का वर्णन करते हुए महाकवि वेंकटाध्वरि लेखन किया है –

'पुरः पुरो घन वन वने वने महागिरीर्महागिरौ महागिरौ विराजते गुहागृहम।
गुहागृहे गुहागृहे विहारतत्परो हरिर्हरौ निरंकुशः कृतेभसाध्वसो ध्वनिः"।। (विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-207)

महाकवि ने वनों में उत्पन्न फल, सुलभ पत्थरों से निर्मित आश्रय स्थल और घनघोर जंगलो में रहने वाले निवासियों का भी वर्णन किया है – **"अनायासग्राह्याण्यवनिपतिभोग्यान्यपि फलान्ययत्नेन प्राप्या नृपसुहृगपेक्ष्याःसुमनसः। असुर्यपश्यान्यप्यहह सुलभान्यश्म-भवनान्यरण्यानीभाजामति पतित भाग्यं किल गिरः"।।**

(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-209)

उपरोक्त उदाहरणों से ये सिद्ध होता है कि भारतवर्ष के महान ऋषियों को ये ज्ञात था कि वृक्षों में जीवन होता है तथा संवेदनशील भी होते है, जिसको आगे चलकर भारत के महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने १९०१ में सिद्ध किया । इसीलिए पर्यावरण को सुरक्षित रखने के उपाय भी संस्कृत ग्रंथो में पर्याप्त मात्र में प्राप्त होते है। वेदों में पर्यावरण के संरक्षण के लिए मानव मात्र को उद्दृत रहने का आवाहन किया गया है । इसमें सर्वप्रथम यज्ञक्रिया को करना अनिवार्य माना है क्योकि यज्ञ करने से वायुमंडल में संचारित सारी अशुद्धियों का अवशोषण हो जाता है तथा वायु शुद्ध और सुगन्धित हो जाती हैद्य वेद मनुष्यों को प्रेरित करते है कि 'तुम अग्नि में शोधक द्रव्यों की आहुति देकर वायुमंडल को शुद्ध करो' - **"आ जुहोता हविषा मर्जयष्वं"।** (सामवेद 7/63)

महाकवि ने भी यज्ञ की अनिवार्यता का वर्णन विश्वगुणादर्श चम्पू काव्य में किया है –

"वर्गे वर्गे धरणिमरूतां वर्धते साधू यज्ञो,
यज्ञे यज्ञे श्रवण सुभगः स्तोत्रशास्त्रानुघोषः"।।

(विश्वगुणादर्शचम्पू, श्लोक संख्या-360)

वायुमंडल को प्रदूषण रहित रखना प्रत्येक मानव का परम कर्तव्य है किन्तु इस वर्तमान युग में विकसित होने की लालसा में हम प्रकृति को कष्ट पंहुचा रहे है । हमारे पर्यावरण का अधिक विघटन ना हो इसके लिए पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 बनाया जिसका मुख्य उद्देश्य प्रकृति का संरक्षण और सुधार करना है। इसके अतिरिक्त 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस और 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में घोषित किया गया जिससे पूरा विश्व पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति स्वयं को उत्तरदायी समझे ।

निष्कर्ष –

जो लोग पाश्चत्य प्रभाव के कारण अपने ग्रंथो की उपेक्षा करते है तथा स्वयं को विश्व स्तर पर कमतर समझने लगे ऐसी मानसिकता वाले व्यक्तियों को महाकवि वेंकटाध्वरि के विश्वगुणादर्श चम्पूकाव्य का पठन अवश्य करना चाहिए ताकि उन्हें ज्ञात हो कि उस समय हमारा ज्ञान विज्ञान अपने चरमोत्कर्ष पर था । इसके पाठन से विज्ञान के नवीन निर्माण कार्यो के मार्ग प्रदर्शित होगे और बुद्धि भी परिष्कृत होगी ।

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. शास्त्री, प्रो० सुरेन्द्रनाथ, श्रीवेंकटाध्वरिप्रणीतः विश्वगुणादर्शचम्पू (2017), चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी |
2. ऋग्वेद, गीताप्रेस |
3. अथर्ववेद, गीताप्रेस|
4. यजुर्वेद, गीताप्रेस |
5. सामवेद, गीताप्रेस |
6. महर्षि भारद्वाजकृत, वृहद्विमानशास्त्र |
7. चतुर्वेदी, आचार्य पं० सीताराम, कालिदास ग्रन्थावली, अभिज्ञानशाकुंतलम्, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान |